कलीदे-ईमान

तौरातो-इंजील को समझने की कुंजी

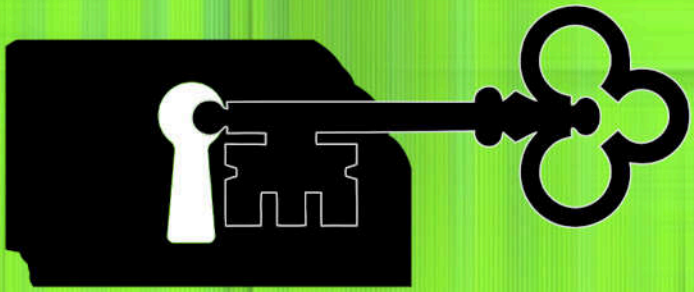

कलीदे-ईमान

तौरातो-इंजील को समझने की कुंजी

बख़्तुल्लाह ख़ान

kalīd-e īmān. taurāt-o-injīl ko samajhne kī kunjī

The Key to Faith. Understanding the Taurat and Injil

by Bakhtullah Khan
(Urdu—Hindi script)

© 2017 Chashma Media
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

तौरेत और इंजीले-शरीफ़ तो मालूमात का बेशबहा ख़ज़ाना हैं। क्या उनका बुनियादी पैग़ाम मालूम करना मुम्किन है? बेशक। किस तरह? पाक नविश्तों को समझने के लिए ज़रूरी है कि हम उनके चार मरकज़ी उसूल समझें। यह चार बातें कुंजी की तरह बाक़ी मवाद का मतलब खोलने में मदद करेंगी। अगर हम इन मरकज़ी मज़ामीन को नज़रंदाज़ कर दें तो हम तौरात और इंजीले-शरीफ़ के गहरे मानी और मफ़हूम को कभी समझ नहीं पाएँगे। ऐसी सूरत में वह हमारे नज़दीक सिर्फ़ ऐसे वाक़ियात और ऐसी तालीमात का मजमुआ बनकर रह जाएँगी जिनका आपस में कोई ताल्लुक़ और रब्त नहीं। लेकिन अगर हम इन कलीदी मज़ामीन को समझ लें तो पाक नविश्तों को नई नज़रों से पढ़ेंगे, और वह हमारे लिए निहायत बामानी बनते जाएँगे। तौरेत और इंजीले-शरीफ़ में दर्जे-ज़ैल चार सच्चाइयाँ पाई जाती हैं।

1

अल्लाह क़ुद्दूस और आदिल है

तौरेत में जब भी अल्लाह अपने आपको ज़ाहिर करता है तो उसकी भस्म करनेवाली क़ुद्दूसियत नज़र आती है। चुनाँचे जब क़ादिरे-मुतलक़ जलती हुई झाड़ी में से अपने नबी मूसा से हमकलाम होता है तो उसे हुक्म देता है कि मेरी हुज़ूरी में अपने पाँव से जूता उतार दे (ख़ुरूज 3:5)। इसी तरह बनी इसराईल को हुक्म दिया गया कि जब तक अल्लाह कोहे-सीना की चोटी पर मूसा पर

ज़ाहिर हो, तुम इस पहाड़ को न छूना (ख़ुरूज 19:12 ओ-माबाद)। यह हुक्म क्यों ज़रूरी हुआ?

ज़रा तसव्वुर करें कि अंधेरे में एक पतंगा है। ज्योंही वह जलती शमा देखता है वह उड़कर उसकी तरफ़ लपकता है। उसे रोशनी की आरज़ू होती है। वह इस झिलमिलाती रोशनी के गिर्द यों चक्कर लगाता है जैसे कोई आशिक़ अपने महबूब के गिर्द। कभी कभी वह ऊपर तारीकी में ग़ायब हो जाता है, लिकन थोड़ी ही देर के बाद वह लौट आता है। रोशनी की कशिश उसे हर लमहा अपनी तरफ़ लुभाती है। रफ़्ता-रफ़्ता पतंगे के चक्करों का दायरा छोटा होता जाता है। वह शमा की रोशनी के क़रीब से क़रीबतर आता जाता है। और आख़िर में तेज़ी से लपककर इस लुभानेवाले शोले से बग़लगीर हो जाता है। वह अपनी आरज़ू और शमा के झुलसा डालनेवाले शोले का शिकार हो जाता है।

इसी तरह अल्लाह तआला की क़ुद्दूसियत इनसान को लुभाती और अपनी तरफ़ खींचती है। अपने दिल की गहराइयों में हर शख़्स अल्लाह के नज़दीक आना चाहता है। उसकी सरिश्त में कोई ऐसी चीज़ है जो उसे अपने ख़ालिक़ के साथ गहरी रिफ़ाक़त रखने पर उभारती है। पतंगे और शमा की तरह ख़ुदा इनसान को तारीकी से अपनी रोशनी में खींच लाता है। मगर एक मरहला आता है कि इनसान रुक जाए या मर जाए। जब अल्लाह अपने नबी मूसा पर

ज़ाहिर हुआ तो इसराईलियों को नज़दीक आने की इजाज़त न दी वरना वह उसकी भस्म करनेवाली क़ुद्दूसियत से भसम हो जाते।

इस राख कर देनेवाली क़ुद्दूसियत के सामने यसायाह नबी पुकार उठता है कि

> मुझ पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो मेरे होंट नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान रहता हूँ उसके होंट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी आँखों से बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को देखा है। (यसायाह 6:5)

यसायाह नबी इस हक़ीक़त को जान लेता है कि इस क़द्दूसियत के सामने इनसान ज़रूर मर जाएगा, क्योंकि उसकी सरिश्त नापाक है। ये ख़ुदा की क़द्दूसियत का दूसरा पहलू है। ख़ुदा के नूर में इनसान को इस गहरे एहसास का तजरबा होता है कि मैं नापाक हूँ, घिनौना और गुनाहआलूद हूँ। मुझ में और ख़ुदा में गहिरी ख़लीज है जिसको मैं कभी उबूर नहीं कर सकता। चुनाँचे उसका रद्दे-अमल लाज़िमन मायूसी और सख़्त दुख होता है।

अपनी गुनाहगारी के इस एहसास की वजह क्या है?

2

इनसान की ज़ात गुनाह-आलूद है

पाक नविश्तों के मुताबिक़ बच्चा मासूम यानी बेगुनाह हालत में पैदा नहीं होता। बेशक शुरू शुरू में अल्लाह ने इनसान को एक कामिल हस्ती तख़लीक़ किया था जिस में कोई ख़ामी या कमी या ऐब न था (पैदाइश 1:26 ओ-माबाद)। इस वजह से इनसान ख़ुदा के साथ पुरएतमाद और क़रीबी रिश्ता रखता था। अल्लाह उसके साथ रिफ़ाक़त रखता और बातें करता था जैसे एक इनसान दूसरे इनसान के साथ करता है। उस वक़्त ऐसा कोई ख़तरा न था कि

इनसान ख़ुदा के नूर में जलकर हलाक हो जाए, क्योंकि वह ख़ुद इस नूर से मामूर था।

मगर इनसान ने अल्लाह की नाफ़रमानी की (पैदाइश 3)। इसका नतीजा यह निकला कि जो "अच्छा" बनाया गया था वह "बुरा" हो गया। यह इनसान की तारीख़ में एक अलमनाक मोड़ था। अब ख़ुदा के साथ उसका रिश्ता टूट गया और वह अपनी बिगड़ी हुई और गुनाहआलूद सरिश्त का क़ैदी बन गया। अब वह चाहते हुए भी अल्लाह की मरज़ी की पैरवी नहीं कर सकता था। एक और नतीजा हुआ कि इनसान जिस्मानी तौर पर नाकामिल और फ़ानी हो गया। चुनाँचे इंजील में क़लमबंद है कि

> अगर आप अपनी पुरानी फ़ितरत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएँगे।
> (रोमियों 8:13)

फ़र्ज़ करो कि कोई आदमी मोहलक ज़हर के चंद क़तरे पानी में डाल दे। क्या इससे पानी का सिर्फ़ थोड़ा-सा हिस्सा ज़हरीला हो जाता है? हरगिज़ नहीं। सारे का सारा पानी ख़राब हो जाता है। और अगर दूध में थोड़े-से जरासीम मिलाए जाएँ तो क्या वह पीने के क़ाबिल रहता है? हरगिज़ नहीं। गो कोई फ़रक़ नज़र नहीं आता तौ भी जरासीम दूध में मौजूद होते बल्कि तादाद में बढ़ते जाते हैं। दूध ख़राब से ख़राबतर होता जाता है।

फ़र्ज़ करें कि कोई बाप अपने बेटे पर पूरा पूरा एतमाद करके उसे ज़मीन का एक क़ितआ दे देता है कि इसकी देख-भाल करे। बाप का पक्का इरादा है कि किसी दिन ज़मीन का यह क़ितआ पूरे तौर पर उसे दे दे। फ़र्ज़ करें कि जैसे ही बाप मुँह फेरता है बेटा वह ज़मीन बेचकर सारी रक़म औबाशी और ऐयाशी में उड़ा देता है। जब बाप को पता चलेगा तो उसके और बेटे के दरमियान के रिश्ते का क्या बनेगा? यह रिश्ता टूट जाएगा। भरोसा और एतमाद जाता रहेगा। अब से बेटे के लिए बाप का एतमाद दुबारा हासिल करना निहायत मुश्किल होगा।

जब ख़ुदा और इनसान के दरमियान रिश्ता टूट जाए तो उसे बहाल करना और भी ज़्यादा मुश्किल होगा, क्योंकि अल्लाह ने इनसान पर जो मुहब्बत-भरा भरोसा किया था इनसान ने उसे लात मारी।

अल-मसीह ने इस ख़याल को निहायत ख़ूबसूरत अंदाज़ में बयान किया है :

> किसी आदमी के दो बेटे थे। इन में से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।' इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम कर दी। थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-दराज़ मुल्क में ले

> गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। सब कुछ ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने की शदीद ख़्वाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। (लूक़ा 15:11-16)

मीरास उमूमन बाप की मौत के बाद मिलती है। लेकिन बेटे ने बाप के जीते जी ही अपना हिस्सा तलब कर लिया। यों उसने बाप को गोया मुरदा क़रार दे दिया। बाहमी रिश्ता तोड़ने में कोई इससे ज़्यादा नहीं कर सकता। अपनी बात को मज़ीद पक्का करने के लिए बेटा ग़ैरमुल्क में चला गया। वहाँ उसे अपने बुरे आमाल की फ़सल काटनी पड़ी। उसने अपनी सारी दौलत अलल्ले-तलल्लों में उड़ा दी और गुनाह की दलदल में धँसता गया। आख़िर सिर्फ़ सुअर उसके साथी रह गए—वह जानवर जो गंदगी और पलीदगी की अलामत हैं। इस बेटे का हाल अब सअुरों से भी बदतर था, क्योंकि वह उसे अपनी ख़ुराक भी खाने नहीं देते थे।

यह इनसान के ख़ुदा से दूर हट जाने और गुनाह में गिरने की कैसी वाज़िह तस्वीर है! इनसान अपनी बुरी ख़्वाहिशात की दलदल में धँसकर इस दुनिया की गंदगी में उतर जाता है।

3

अल्लाह शफ़ीक़ो-रहीम है

अल्लाह ने अज़ल ही से पसंद किया कि इनसान के साथ ताल्लुक़ और रिश्ता क़ायम करे। इस हक़ीक़त का सबूत यह है कि उसने इनसान को अपनी शबीह पर बनाया और उसके नथनों में अपनी ज़िंदगी का दम फूँका। वह मुहब्बत-भरा बाप था जिसने अपने बच्चों के लिए सब कुछ किया। पाक नविश्तों में कैसे हैरतअंगेज़ ख़ुदा का मुकाशफ़ा दिया गया है। वह ज़ालिम नहीं, वह ऐसे सायंसदान की मानिंद नहीं जिसने कोई ऐसी घड़ी या मशीन बनाई हो जो बटन दबाने से उसकी मरज़ी पूरी करती रहे। नहीं बल्कि वह मुहब्बत-भरा ख़ुदा है जिसने इनसान को ख़लक़ करते वक़्त उसे

आज़ाद मरज़ी अता की। इनसान ख़ुद फ़ैसला कर सकता है कि मैं अल्लाह की राह पर चलूँ या अपनी राहें इख़्तियार करूँ।

अफ़सोस कि इनसान ने नाफ़रमानी की और बाग़े-अदन में ममनुआ फल खाकर अल्लाह से रिश्ता तोड़ लिया। वह फल बज़ाते-ख़ुद बुरा न था, बल्कि इनसान की यह ख़्वाहिश बुरी थी कि अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी करे। इनसान की तारीख़ शाहिद है कि वह ख़ुदा से दूर, और दूर होता गया। वह गुनाह और बदी में बढ़ता ही चला गया। यह कोई ख़याली बात नहीं बल्कि हम अपनी आँखों से देखते हैं कि हमारे इर्दगिर्द की दुनिया हर क़िस्म की तरक़्क़ी के बावुजूद ज़ुल्मो-तशद्दुद और क़तलो-ग़ारत में बढ़ती ही जा रही है।

लेकिन पाक नविश्तों का हैरतअंगेज़ पैग़ाम यह है कि इनसान अल्लाह से जिस क़दर दूर होता गया, ख़ुदा अपने रहम और शफ़क़त का इसी क़दर इज़हार करता रहा। यह बात अल्लाह के आदम के साथ रवैये और बाद में अपनी क़ौम के साथ ताल्लुक़ से बिलकुल वाज़िह है। ख़ुदा ने बनी इसराईल के साथ इस रिश्ते की बार बार तजदीद की, हालाँकि वह बार बार बग़ावत और सरकशी करते रहे (होसेअ 11, हिज़क़ियेल बाब 20, यरमियाह 45:3-5 वग़ैरा)। गुमशुदा बेटे की तमसील बयान हुई है। ईसा अल-मसीह इस तमसील में अल्लाह की बेमिसाल मुहब्बत को वाज़िह करते हैं।

फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, मेरे बाप के कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है जब कि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें।' फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।' लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँव में जूते पहना दो। फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ, क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, गुम हो गया था

> अब मिल गया है।' इस पर वह ख़ुशी मनाने लगे।
> (लूक़ा 15:17-24)

इस तमसील की हैरतअंगेज़ बात यह नहीं कि बेटा वापस आ गया बल्कि बाप की मुहब्बत है। बाप ने बेटे को दूर ही से देख लिया। मतलब है कि बाप उस वक़्त से इंतज़ार कर रहा था जब वह घर से निकला था। उसकी मुहब्बत में कभी लग़ज़िश नहीं आई। उस बाप की तरह ख़ुदा भी बड़ी फ़िकरमंदी से हमारा इंतज़ार कर रहा है। वह जो ज़मीन और आसमान का ख़ालिक़ और मालिक है, उसे नाचीज़ इनसान की क्या ज़रूरत? बल्कि मुनासिब यह होता कि उसको ज़मीन पर पटककर हलाक कर दे। वह सिर्फ़ अपनी मुहब्बत के बाइस गुनाह और तारीकी में पड़े हुए इनसान की फ़िकर करता है। लेकिन अफ़सोस कि इनसान इस मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से नहीं देता गो अल्लाह बाज़ू फैलाए बड़ी आरज़ू से इंतज़ार करता है कि इनसान मेरे पास आए ताकि मैं उसे उसके मरतबे पर बहाल करूँ।

इस तरह कलामे-मुक़द्दस इस हक़ीक़त को वाज़िह करता है कि अदलो-क़ुद्दूसियत और रहमो-मुहब्बत ख़ुदा की ज़ात के अटूट हिस्से हैं। अल्लाह की यह सिफ़ात वक़्त के गुज़रने के साथ नहीं बदलतीं बल्कि उसकी इन सिफ़ात पर हम ज़िंदगी की हर सूरते-हाल में एतमाद कर सकते हैं।

4

अल्लाह ही इनसान को रास्तबाज़ ठहराता है

इनसान की नारास्ती ख़ुदा के क़ुद्दूस अदल का सामना नहीं कर सकती (यसायाह 6:5)। लेकिन अल्लाह की रहमत-भरी मुहब्बत उसे बचाना और वही कुछ बनाना चाहती है जिसके लिए ख़ालिक़ ने उसे पैदा किया था। क्या इस बात में तज़ाद नहीं है? क्या यह मंतक़ी तौर पर नामुमकिन नहीं? अगर ख़ुदा इनसान पर तरस खाए तो उसके अदल की तसकीन कैसे हो सकती है? अल्लाह

की क़ुद्दूसियत और उसके रहम में इस बज़ाहिर तज़ाद को तौरात और इंजीले-शरीफ़ किस तरह हल करती है?

पाक नविश्तों के मुताबिक़ इस तज़ाद का सिर्फ़ एक ही हल है और वह है अल-मसीह। कैसे?

गुनाह की सज़ा मौत है। इसका ज़िक्र हो चुका है कि कलामे-पाक में कई जगह यह बात बिलकुल वाज़िह कर दी गई है। इसी लिए बनी इसराईल जानवरों की क़ुरबानियाँ चढ़ाया करते थे। अलामती तौर पर इनसान के गुनाह क़ुरबानी के जानवर पर मुंतक़िल हो जाते थे और गुनाह की सज़ा यानी मौत क़ुरबानी के जानवर को दी जाती थी। यह बेऐब जानवर इनसान के बदले मरते थे। ताहम बनी इसराईल को भी इल्म था कि यह जानवर किसी आनेवाली बेहतर चीज़ का अक्स हैं। चुनाँचे होसेअ नबी अल्लाह के बारे में बयान करता है कि

> मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ, भस्म होनेवाली क़ुरबानियों की निसबत मुझे यह पसंद है कि तुम अल्लाह को जान लो। (होसेअ 6:6)

लेकिन अगर जानवरों की क़ुरबानी महज़ अक्स है तो असल क़ुरबानी क्या होगी? कौन गुनाह का बोझ मुकम्मल तौर पर दूर करके ख़ुदा से इनसान का मेल करा सकता है?

यसायाह नबी ने इस सवाल के जवाब में अल-मसीह से सदियों पेशतर एक हैरतअंगेज़ पीशीनगोई की जिससे उस ज़माने के लोगों के दिमाग़ चकरा गए,

> उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उसकी साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उसकी तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उसकी कुछ क़दर नहीं करते थे।
>
> लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है। लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शिफ़ा मिली। हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।
>
> उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़

की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला। उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। अब कौन उसकी नसल का ख़याल करेगा? क्योंकि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है। अपनी क़ौम के जुर्म के सबब से वह सज़ा का निशाना बन गया। मुक़र्रर यह हुआ कि उसकी क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उसने तशद्दुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था।

लेकिन रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचला जाए। उसी ने उसे दुख का निशाना बनाया। और गो रब उसकी जान के ज़रीए कफ़्फ़ारा देगा तो भी वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा। रब उसके दिनों में इज़ाफ़ा करेगा, और वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। इतनी तक्लीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इनसाफ़ क़ायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

> इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह ज़ोरावरों के साथ लूट का माल तक़सीम करेगा। क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया। हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की। (यसायाह 53:3-12)

नबी किस क़िस्म के शख़्स की पेशगोई करता है? क्या वह कोई ज़बरदस्त बादशाह होगा जो जंग करके अपनी उम्मत को बचाएगा? हरगिज़ नहीं! नबी एक लासानी शख़्सियत की तस्वीर खींचता है जो अपने लोगों को उनके गुनाहों से नजात देने आएगी। अगरचे यह शख़्स बिलकुल बेगुनाह होगा तो भी उसकी तहक़ीर की जाएगी। वह दूसरों की जगह क़ुरबान होनेवाला बकरा (अहबार 16) होगा और दूसरों के गुनाह ख़ुद उठा लेगा। वह तो बनी आदम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगा।

इंजीले-शरीफ़ हमें यह बशारत देती है कि यह शख़्स ईसा अल-मसीह के सिवा और कोई नहीं। वही वह वाहिद शख़्स है जिसने कभी गुनाह नहीं किया। वह गुनाह से बिलकुल मुबर्रा है। उनकी लासानी ज़ात इससे भी आश्कारा है कि वह कुँवारी से पैदा हुए। उन्हें इस दुनिया में इसलिए भेजा गया कि इनसानों को उनके गुनाहों से बचाएँ। कैसे? इस राह पर चलकर जिसका बयान यसायाह नबी

ने किया था—अपने आपको इनसान के मुशाबेह बनाकर और बनी आदम के गुनाह ख़ुद उठाकर सलीब पर चढ़कर।

हम इस वाक़िये की सारी तफ़ासील में नहीं जा सकते। फ़िलहाल सिर्फ़ इस बात पर ग़ौर करेंगे कि यह सब कुछ अल्लाह की ज़ात के साथ कैसे मेल खाता है।

हमने जान लिया है कि ख़ुदा क़ुद्दूस और आदिल है। और यह भी कि वह शफ़ीक़ो-रहीम है। इसके अलावा हमने इस पर भी ग़ौर किया कि जब हम इनसान की गुनाहआलूद फ़ितरत को देखते हैं तो अल्लाह की यह सिफ़ात एक दूसरी से टकराती हुई मालूम होती हैं। क्योंकि इनसान की नाफ़रमानी के सामने ख़ुदा इन दोनों सिफ़ात यानी अपने अदल और रहम को बयकवक़्त किस तरह बरूए-कार ला सकता है? चूँकि वह आदिल है इसलिए ज़रूर है कि इनसान को सज़ा दे। दूसरी तरफ़ उसका रहम इनसान को बचाने और माफ़ करने को तड़पता है। इस तज़ाद का हल क्या है?

इस मुअम्मा की कलीद अल-मसीह है। अल्लाह ने अल-मसीह को दुनिया में भेजा ताकि वह इनसान की सज़ा उठा लें। सिर्फ़ इलाही ज़ात होने के बाइस वह यह काम पूरा कर सकते थे। और सिर्फ़ इनसान होते हुए वह इनसान की जगह जान दे सकते थे।

अल-मसीह में ख़ुदा के अदल और क़ुद्दूसियत दोनों की तसकीन हो गई। जिस सज़ा का तक़ाज़ा अल्लाह का अदल करता है उसे अल-मसीह ने इनसान के बदले उठा लिया। और साथ ही

अल-मसीह के वसीले से ख़ुदा की रहमत और मुहब्बत ऐसे गहरे तौर पर ज़ाहिर हुई कि पहले कभी न हुई थी। अल्लाह के रहम ही ने अल-मसीह को इस दुनिया की तारीकी में भेजा। उसकी अथाह मुहब्बत ही ने कामिल तौर पर जानते हुए भी उसको सलीब पर जान देने को भेजा। अल-मसीह की कफ़्फ़ारा की मौत ख़ुदा की मुहब्बत की मेराज थी, तारीकतरीन जुदाई की घड़ी उसके बेइंतहा रहम की मेराज थी।

अल-मसीह के इस काम के बाइस उसके पैरोकार अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं। वह मुहब्बत-भरा रिश्ता जो गुनाह के इस दुनिया में आने से पेशतर क़ायम था, ख़ुदा ने उसे फिर से बहाल कर दिया।

यहाँ हमें तसलीस के अज़ली भेद की झलक दिखाई देती है, उस बाप की झलक जो कि सरापा क़ुद्दूसियत और अदल का हामिल है। लेकिन साथ ही मुहब्बत करनेवाले बाप की भी झलक जो न सिर्फ़ इनसान के ग़लत कामों पर नाराज़ होता है बल्कि जो अपने फ़रज़ंद को दुनिया में भेजता है ताकि उनकी ख़ताएँ अपने ऊपर उठाकर उनको नजात दे।